

भैरव चालोसा

दोहा

श्री भैरव संकट हरन, मंगल करन कृपालु।
करहु दया निज दास पे, निशिदिन दीनदयालु॥

चौपाई 1

जय डमरूधर नयन विशाला।
श्याम वर्ण, वपु महा कराला॥

चौपाई 2

जय त्रिशूलधर जय डमरूधर।
काशी कोतवाल, संकटहर॥

चौपाई 3

जय गिरिजासुत परमकृपाला।
संकटहरण, हरहु भ्रमजाला॥

चौपाई 4

जयति बटुक भैरव भयहारी।
जयति काल भैरव बलधारी॥

चौपाई 5

अष्टरूप तुम्हरे सब गाये।
सफल एक ते एक सिवाये॥

चौपाई 6

शिवस्वरूप शिव के अनुगामी।
गणाधीश तुम सबके स्वामी॥

चौपाई 7

जटाजूट पर मुकुट सुहावै।
भालचन्द्र अति शोभा पावै॥

चौपाई 8

कटि करधनी घुँघरू बाजै।
दर्शन करत सकल भय भाजै॥

चौपाई 9

कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर।
मोरपंख को चंवर मनोहर॥

चौपाई 10

खप्पर खड़ग लिए बलवाना।
रूप चतुर्भुज नाथ बखाना॥

चौपाई 11

वाहन श्वान सदा सुखरासी।
तुम अनन्त प्रभु तुम अविनासी॥

चौपाई 12

जय जय जय भैरव भय भंजन।
जय कृपालु भक्तन मनरंजन॥

चौपाई 13

नयन विशाल लाल अति भारी।
रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी॥

चौपाई 14

बं बं बं बोलत दिनराती।
शिव कहँ भजहु असुर आराती॥

चौपाई 15

एकरूप तुम शम्भु कहाये।
दूजे भैरव रूप बनाये॥

चौपाई 16

सेवक तुमहिं तुमहिं प्रभु स्वामी।
सब जग के तुम अन्तर्यामी॥

चौपाई 17

रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा।
श्यामवर्ण कहँ होइ प्रचारा॥

चौपाई 18

श्वेतवर्ण पुनि कहा बखानी।
तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी॥

चौपाई 19

तीनि नयन प्रभु परम सुहावहिं।
सुरनर मुनि सब ध्यान लगावहिं॥

चौपाई 20

व्याघ्र चर्मधर तुम जग स्वामी।
प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी॥

चौपाई 21

चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा।
निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा॥

चौपाई 22

क्रोधवत्स भूतेश कालधर।
चक्रतुण्ड दशबाहु व्यालधर॥

चौपाई 23

अहहिं कोटि प्रभु नाम तुम्हारे।
जपत सदा मेटत दुःख भारे॥

चौपाई 24

चौसठ योगिनी नाचहिं संगी।
क्रोधवान तुम अति रणरंगा॥

चौपाई 25

भूतनाथ तुम परम पुनीता।
तुम भविष्य तुम अहहु अतीता॥

चौपाई 26

वर्तमान तुम्हरो शुचि रूपा।
कालमयी तुम परम अनूपा॥

चौपाई 27

ऐलादी को संकट टार्यो।
साद भक्त को कारज सार्यो॥

चौपाई 28

कालीपुत्र कहावहु नाथा।
तब चरणन नावहुं नित माथा॥

चौपाई 29

श्रीक्रोधेश कृपा विस्तारहु।
दीन जानि मोहि पार उतारहु॥

चौपाई 30

भवसागर बूढ़त दिनराती।
होहु कृपालु दुष्ट आराती॥

चौपाई 31

सेवक जानि कृपा प्रभु कीजै।
मोहिं भगति अपनी अब दीजै॥

चौपाई 32

करहुं सदा भैरव की सेवा।
तुम समान दूजो को देवा॥

चौपाई 33

अश्वनाथ तुम परम मनोहर।
दुष्टन कहँ प्रभु अहहु भयंकर॥

चौपाई 34

तुम्हरो दास जहाँ जो होई।
ताकहुं संकट परे न कोई॥

चौपाई 35

हरहु नाथ तुम जन की पीरा।
तुम समान प्रभु को बलवीरा॥

चौपाई 36

सब अपराध क्षमा करि दीजै।
दीन जानि आपुन मोहिं कीजै॥

चौपाई 37

जो यह पाठ करे चालीसा।
तापै कृपा करहु जगदीशा॥

समापन दोहा

जय भैरव जय भूतपति जय जय जय सुखकन्द।
करहु कृपा नित दास पे, देहु सदा आनन्द॥